म० म० परमेश्वर झा कृत

दुर्गाचरित नाटक



सम्पादक

डॉ० रामदेवझा

Scanned by CamScanner

म० म० परमेश्वर झा कृत

दुर्गाचरित नाटक

सम्पादक
डॉ० श्री रामदेव झा
एम.ए., पी-एच.डी.

Scanned by CamScanner

M.M. PARMESHWAR JHA KRIT **DURGACHARIT NATAK**

BY

DR. RAMDEO JHA

© श्री रामदेव झा

प्रकाशक : शंकरदेव झा
कविलपुर (लहेरियासराय) दरभंगा

संस्करण : प्रथम
1996 ई.

मूल्य : 15/

मुद्रक : **नोवेल्टी एण्ड कम्पनी,**
ताराभवन,
अशोक राजपथ,
पटना 800 004

जिज्ञासा, तंत्रवती गीताभवन, राँटी, मधुबनी सँ साभार

Scanned by CamScanner

भूमिका

आधुनिक मैथिली साहित्यक गद्य-विधाकेँ अभिव्यक्ति-सामर्थ्य दए ओकरा परिमार्जित ओ समृद्ध कएनिहार प्रतिभा-सम्पन्न लेखकमे म.म. परमेश्वर झा (1856-1924) केर स्थान विशिष्टतम रहलनि अछि। मैथिली गद्यक क्षेत्रमे मौलिक साहित्यिक कृति ओ विवरणात्मक ग्रन्थक कारणेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक अर्धशताब्दीमे परमेश्वर झा महत्त्रयीमे परिगणित कएल जाइत छलाह।1913 ई.मे म.म. परमेश्वर झाक **मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित** भेनिहार ग्रन्थ **मिथिला-तत्त्व-विमर्श**क समालोचना करैत म.म. मुरलीधर झा विचार व्यक्त कएने छलाह –

> *इतःपूर्व 50 वर्ष मध्य मिथिलाभाषाक अनुरागी मैथिल 3 मात्र। प्रथम पं. चन्दा झा (चन्द्र कवि), दोसर पं. जीवन झा यज्वालय, तेसर अपनहि।..... अपनेक गद्यात्मक लेख बहुत तथा संस्कृत विद्याक आधिक्यो अपनेमे के नहि कहि सकैछ...... ।*
>
> (मिथिला मोद, वर्ष 8, भाद्रपद, उद्गार 83, 1321 साल)

किन्तु हुनक जीवन ओ कृतिक सम्बन्धमे जे गम्भीर अनुसन्धान-आलोचना होएबाक चाही से एखन धरि भेल नहि अछि। हुनक जे ग्रन्थ वा ग्रन्थक जतबा अंश जहिया-कहियो प्रकाशित भेल, से भेल। जे अप्रकाशित रहल से अप्रकाशिते रहि गेल। **मिथिला तत्त्व विमर्श** हुनक मृत्युपरान्ते 1949 ई.मे समग्र रूपमे मुद्रित भेल ओ तकरे पुनर्मुद्रण 1977 ई. मे भए सकल। एतावन्मात्र।

म.म. परमेश्वर झा उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक प्रथम चरणमे मिथिले नहि, भारतीय मनीषाक प्रतिमानक रूपमे प्रतिष्ठित छलाह। बौद्धिक उत्कर्षक मान्यताक रूपमे हिनका कर्मकाण्डोद्धारक, वैयाकरणकेसरी ओ महामहोपाध्याय-सन सम्मानोपाधिसँ अलंकृत कएल गेल छलनि। ई संस्कृत विद्याक क्षेत्रमे, विशेषतः कर्मकाण्ड ओ व्याकरणक अद्वितीय विद्वान् छलाहे, सङ्गहि मिथिला ओ भारतक पुराविद्याक सेहो विशेषज्ञ छलाह। अपन समकालीन अधिकांश संस्कृत विद्वानलोकनिसँ एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिएँ भिन्न छलाह जे ई संस्कृत भाषाक सङ्गहि मिथिला भाषाकेँ सेहो समाने प्रतिष्ठा ओ गरिमा प्रदान कएलनि। उच्चकोटिक साहित्य-सर्जन, गंभीर चिन्तन ओ गवेषण हेतु संस्कृतहि जकाँ मैथिलिओकेँ माध्यम बनओलनि। हिनक सारस्वत साधनाक ओ सर्जनात्मक प्रतिभाक अवदान संस्कृत ओ मिथिला भाषामे रचित उनचालिस गोट ग्रन्थक रूपमे उपलब्ध अछि।

Scanned by CamScanner

एकरा दुर्भाग्ये कहक चाही जे एहि सबमे प्रायः एगारहे गोट प्रकाशित भए सकल, जे प्रायः दुर्लभ वा अलभ्ये जकाँ अछि।

संस्कृतमे कर्मकाण्ड ओ व्याकरण-कोष विषयक वैदुष्यपूर्ण ग्रन्थसँ इतर हिनक विशिष्ट सर्जनात्मक प्रतिभा परिचायक छओ गोट साहित्यिक कृति अभिज्ञात अछि जाहिमे **यक्षसमागम** ओ **वाताह्वान** मात्र प्रकाशित छनि। शेष चारि गोट कृति – **कुसुमकलिका आख्यायिका, ऋतुवर्णन, मिथिलेश-प्रशस्ति** ओ **श्रीरमेश्वर रत्नाकर** अप्रकाशिते छनि।

एहिमे अन्तिम **श्रीरमेश्वर रत्नाकर** महामहोपाध्यायेजी द्वारा रचित छनि, ताहिमे शंका भए सकैत अछि। महामहोपाध्याय जीक जे किछु हस्तलेखादि उपलब्ध भेल अछि, ताहिमे आठ-नओ पृष्ठक एक नाटक सुन्दर तिरहुतामे लिखल अछि। भाषा एकर मैथिली थिक। किन्तु एकर अक्षर महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक अपना हाथसँ लिखल **कुसुमकलिका** आख्यायिका पोथीक तिरहुतासँ सर्वथा भिन्न अछि। एहि नाटकक नाम आरम्भमे कहल गेल अछि – **श्री 108 महाराज रमेश्वर-नवरत्न नाटकम्**। प्रस्तावनामे सूत्रधार सोझे रमेश्वर नवरत्न नाटक नाम कहैत अछि। सूत्रधारक वाक्य अछि –

अहो प्रियबन्धु सभ्यगण आज हम मिथिलामहाराजाधिराज मैथिल कुलकमल दिवाकर प्रताप मुकुट श्री 108 रमेश्वर सिंह बहादुरक आज्ञासँ रमेश्वर नवरत्न नाटक करबाक प्रस्तावना करैत छी ताहिमे अपने लोकनि धन्यवादास्पद हयब–

तत्पश्चात् सूत्रधार द्वारा नवरत्नगणक विरुद् ओ विशेषण सहित नामावलीक उच्चारण कएल जाइत अछि। एहिमे पाँचम नाम म.म. परमेश्वर झाक सेहो छनि, यथा –

श्री बाबू परमेश्वर झा महामहोपाध्याय वैयाकर(ण) विनोद वनकेशरी – पण्डित।

अन्य नाम सब अछि क्रमशः सर्वश्री बाबू हरिनारायण झा, महादेव ठाकुर, लोकनाथ चौधरी, भागवत ठाकुर, डाक्टर सूर्य्य कुमार मोजिमदार, सुन्दर झा, कंटिर ठाकुर, परमानन्द ठाकुर एवं सुरेश मिश्र। नवरत्नानुमोदक कहल गेल छथि रघुवर कुमर। अतः पर सूत्रधार महाराजाधिराज मिथिलेश्वर बहादुर द्वारा गायत्रीक कोत्याहुत होम यज्ञक आयोजनक सूचना दैत ओकर व्यवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्रस्तवानाक पश्चात् प्रथम अंकमे यज्ञक घटना देखाओल गेल अछि। स्वाहा-स्वाहाक संग प्रथमांक समाप्त होइत अछि। ठीक तकरा नीचाँमे लिखित अछि –

ठक्कुरोपाह्व श्री शशिनाथ शर्म्मा मैथिलः निवासी, पो. बिहपुर, ध्रुवगञ्ज ग्राम भागलपूर।

एही पत्रक दोसर पृष्ठ पर पुनः नओ गोट विशिष्ट व्यक्तिक नाम देल गेल अछि, किन्तु आगाँ नाटकक अंश नहि अछि। नाटक अपूर्ण अछि वा एकहि अंकमे सम्पन्न अछि से निश्चय नहि भए पबैत अछि। प्रथम अंकक अन्तमे जेना शशिनाथ ठक्कुरक नाम-पता देल

Scanned by CamScanner

अछि, ताहिसँ अनुमान होइत अछि जे इएह एकर रचयिता होथि। नाटकक मध्यमे बहुत काट-कूट ओ संशोधन कएल गेल अछि। संशोधनक अक्षर मूल अक्षरसँ भिन्न आकारक अछि। अनुमान होइत अछि जे नाटकक रचयिता प्रायः अपन पाण्डुलिपि संशोधन हेतु महामहोपाध्यायजी कें देने छलथिन। ओहिमे श्री रमेश्वर नवरत्न नाम देखि परवर्ती व्यक्ति सभ संभवतः भ्रमसँ श्री रमेश्वर रत्नाकर नामेँ परमेश्वर झाक कृतिक रूपमे उल्लेख कए देने होथि। एकर निराकरण मूल पोथी भेटले उत्तर भए सकैत अछि। एहि ठाम कनेक विषयान्तर एहि हेतु भेल अछि जे ई पोथी किछु साहित्यिक ओ विशेष ऐतिहासिक महत्त्वक सिद्ध भए सकैत अछि।

कुसुमकलिका आख्यायिका संस्कृतमे रचित गद्यकाव्य थिक। एकर रचना 1903 इसवी वा ओहिसँ पूर्वे भेल छल। कारण, एकर पाण्डुलिपिक प्रथम पृष्ठ पर गाढा निवासी मधुसूदन शर्म्मा (विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा)क अपना हाथे लिखल दुइ गोट प्रशस्ति-पद्य अछि एवं हस्ताक्षरक नीचाँ तिथि देल अछि 4/8/03 ओ दुहू पद्य अछि निम्न रूपक –

मुद्रितैव दिशि लोकचातुरी
सौरभं सरभसं विकीरयेत्।
इत्यपूर्व्वकलिकेयमुद्गता
कं न मोदयति पारमेश्वरी ॥1 ॥
इदं तव रमेश्वरेण परमेश्वर ! श्लाध्यते
समागमनमद्भुतं पदपदार्थसार्थक्रमम्।
विशेषयति वर्ण्णतः प्रथमतः... सर्व्वात्मना
समर्पयति यत्त्वयि स्वगुणमन्तरङ्गी कृतम् ॥2 ॥

पाण्डुलिपि 66 पन्नामे अछि। दुहू पीठमे सुन्दर तिरहुतामे 129 पृष्ठ लिखल अछि। आरम्भमे शीर्षक देल अछि –

कुसुमकलिका आख्यायिका

प्रकाशिकाख्यव्याख्यया सङ्कलिता श्री परमेश्वरशर्म्मविरचिता।

प्रत्येक पृष्ठक उपरमे देल अछि – **कुसुमकलिकाख्यायिका सटीका**। प्रत्येक पृष्ठक उपरका भागमे मूल ओ अधोभागमे टीका देल गेल अछि। टीकामे पाण्डित्यप्रदर्शनक अपेक्षा मूलक अर्थक बोधगम्यता पर विशेष ध्यान राखल गेल अछि। अतः अनेक ठाम कोष्ठबद्ध रूपमे मैथिली, उर्दू ओ अंगरेजिओ शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि, यथा – जुन्ना, कोइरि, पहि, टापि, करीनक भरसहा, सोहाँस, अमोट, खुद्दी, धान, खाम्ह, बिड़रो, घुघुरू, घूस, रिश्वत, कैद, स्टेशन, रेलगाड़ीक टेन, बडहर, झिंगुर, कंकड़, कुर्त्ता, खोता, बड़री, पर्दा, कुची इत्यादि।

Scanned by CamScanner

एहि प्रकारक मैथिली शब्दक प्रयोग परमेश्वर झाक अन्यहु ग्रन्थक टीकामे प्रचुरतया भेल अछि। एहिसँ हुनक मिथिला भाषाक प्रति अनुराग ओ आदरक भाव केहन गम्भीर छल तकर अनुमान सहजहि कएल जाए सकैत अछि। ओ कर्मकाण्ड विषयक दुइ गोट ग्रन्थ एहनो लिखने छथि जकर मूलवाक्य संस्कृतमे अछि तथा प्रयोग-प्रक्रियाक समस्त वर्णन-विवरण मैथिलीमे देल गेल अछि। ओ दुनू ग्रन्थ थिक – **कायस्थादिसदाचारपद्धति** आ **सदाचार दर्पण**।

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कथन छनि जे 'कायस्थादि सदाचार पद्धति जकर संस्करण सम्प्रति दुष्प्राप्य अछि, मूलवाक्यक अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रक्रिया मिथिला भाषा निबद्ध अछि। एहि ग्रन्थकेँ कर्मकाण्ड विषयक मैथिलीक प्रथम ग्रन्थ होएबाक गौरव प्राप्त छैक।

कर्मकाण्डसँ हटि म.म. परमेश्वर झा मिथिला भाषामे परिनिष्ठित गद्यमे इतिहासविषयक मानक ग्रन्थ **मिथिला तत्त्व-विमर्श** मौलिक साहित्यिक गद्यकृति **सीमन्तिनी आख्यायिका** ओ नाट्यकृति **महिषासुर बधक** रचना कए मैथिली साहित्यिक इतिहास-पुरुषक रूपमे स्थापित भए गेलाह। एहिमे **मिथिला-तत्त्व-विमर्श** मात्रक स्वतन्त्र ग्रन्थक रूपमे दुइ गोट संस्करण प्रकाशित भए सकल अछि। **सीमन्तिनी आख्यायिका मिथिला मोदक** आरम्भिक वर्षमे क्रमशः प्रकाशित भएकेँ रहि गेल। **महिषासुर वध** नामसँ चर्चित नाटक अद्यापि अप्रकाशिते अछि।

एहि नाटकक उपलब्ध पाण्डुलिपि 17 × 26 से.मी. आकारमे एकपिट्ठा 26 पृष्ठमे देवाक्षरमे कारी मोसिसँ लिखल अछि। छठम पृष्ठक दोसर पीठ पर दोसर कलम ओ मोसिसँ संस्कृतमे इन्द्रस्तुतिक दुइ गोट गीत पश्चातकाल जोड़बाक उद्देश्यसँ लिखल गेल अछि। अन्तिम पृष्ठक दोसर पीठ पर सेहो एकटा पद्य लिखल अछि। ओ 'श्री गणेशाय नमः'क पश्चात् एहि रूपक अछि–

कश्चित्केलीपरमरसिकः कान्तया विप्रयुक्तः
कामी कस्माच्चिदपि बलवत्कारणादब्दमेकम्।
सीतातातप्रथितविषये दर्पभङ्गाभिधानं
राज्ञो धामानुपमसुषमं विभ्रमन्नध्युवास॥

निश्चिते ई पद्य विवेच्य नाटकक प्रसंगसँ भिन्न अछि। संभवतः ई यक्षसमागम काव्यक पहिल पद्य थिक। पोथी देखले उत्तर एकर निश्चय भए सकैत अछि।

पाण्डुलिपिक प्रत्येक पृष्ठमे सामान्यतः उनैस गोट पाँती अछि। एक बेर समग्र पोथी लिखि गेलाक पश्चात्, प्रायः 1914 ई.क बाद लेखक पुनः पाण्डुलिपिमे संशोधन, परिवर्तन ओ परवर्द्धन कएलनि। एहि बेरक कलम मोट ओ मोसि भिन्न रंगक देखल जाइत अछि। सम्पादनक क्रममे संशोधित, परिवर्तित ओ परिवर्द्धित अंशकेँ यथासाध्य आयताकार कोष्ठ [ ]क अन्तर्गत राखल गेल अछि।

Scanned by CamScanner

वर्त्तनी एहू नाटकमे **मिथिला-तत्त्व-विमर्शक** अनुरूपे अछि। तथापि दू-एक बिन्दुक उल्लेख आवश्यक लगैत अछि। सानुनासिकता व्यक्त करबाक लेल चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार दुहूक प्रयोग भेल अछि। **तँ, सँ, आगाँ, जकाँ** पर चन्द्रबिन्दुक प्रयोग सर्वत्र अछि, किन्तु अन्यत्र वैकल्पिक प्रयोग अछि जेना **अहूं-अहाँ**। अप्यर्थक **हमहुँ-हमहुं** रूप भेटैछ मुदा क्रियापदमे सर्वत्र अनुस्वार प्रयुक्त अछि, जेना – **भेलहुं, थिकहुं, थिकौं, रहलहुं** इत्यादि। **केँ** विभक्तिकेँ सर्वत्र **कें** ओ कतोक ठाम **कैं** लिखल गेल अछि। **तें कें तें** रूपमे लिखल गेल अछि तँ तृतीया विभक्ति **एँ कें ऐं** रूपमे, जेना – **तरहैं, प्रसादैं, वाक्यैं** इत्यादि। मे विभक्ति ओ नहि मे सर्वत्र अनुस्वारक प्रयोग भेल अछि। हस्तलेखमे अनुस्वार देबाक रीतिमे विशिष्टता देखल जाइत अछि। देवाक्षर लेखनमे इ-ई-कार, ए-ऐकार, ओ-औकारमे अनुस्वारक बिन्दु अक्षरक शिरोरेखाक ऊपर मात्रा चिन्हक दहिन भागमे देल जाइत अछि। किन्तु एहि हस्तलेखमे कतोक ठाम अनुस्वारक बिन्दु शिरोरेखासँ ऊपर मात्रा चिन्हक पेटमे देल गेल अछि, जेना – कें, नहि, मे।

विराम-चिह्नमे पूर्ण विरामक हेतु पासी (।) क प्रयोग अछि। पद्यमे दू-पासीक प्रयोग अछि। एहिसँ इतर अल्पविराम (,)क प्रश्नवाचक (?) ओ विस्मयादिबोधक चिह्न (!)क सेहो यथास्थान प्रयोग कएल गेल अछि। यदि संवादक मध्यमे वा नाट्य-निर्देशक मध्यमे ककरो उक्ति देल गेल अछि तँ ओ इनभर्टेड कॉमा (" ")मे संकेतित अछि। मुदा कतोक ठाम आरम्भमे तँ अछि मुदा समापनमे नहि। एहनठाम सम्पादनमे ओ दए देल गेल अछि। नाट्य-निर्देश सामान्यतः लघुकोष्ठमे प्रदत्त अछि। कोष्ठक बाद कतोक ठाम पूर्णविराम, पूर्ण विराम ओ एकटा बिन्दु अथवा सोझे बिन्दु देल गेल अछि। मुदा कतोक ठाम नाट्य-निर्देशमे लघुकोष्ठ छुटलो अछि। एहन ठाम सम्पादनमे लघुकोष्ठ दए देल गेल अछि।

एहि नाटकक रचना कहिआ भेल तकरा सम्बन्धमे कोने सूचना नहि अछि। अन्तःसाक्ष्यक आधार पर किछु अनुमान कएल जाए सकैत अछि। प्रस्तावनाक सूत्रधार-वाक्यमे रचयिताक नामक संग **वैयाकरणकेसरि** उपाधि देल अछि। पश्चात् दोसर मोसि ओ मोट कलमसँ पंक्तिक उपरमे नामसँ **महामहोपाध्याय** जोड़ल गेल अछि। अतःएकर रचना **वैयाकरणकेसरी** उपाधि प्राप्तिक पश्चात् ओ **महामहोपाध्याय** उपाधि प्राप्तिसँ पूर्व भेल होएत। ई जानल अछि जे 1906 ई. क कातिक मासमे भारत धर्म महामण्डलक प्रयाग अधिवेशनमे ई **वैयाकरणकेसरी** उपाधिसँ एवं 1914 ई.क माघ मासमे **महामहोपाध्याय** उपाधिसँ विभूषित कएल गेल छलाह। एहि दुनू तिथि-सीमाक मध्यमे एकर रचना भेल होएत। एक बात आओर ध्यान देबाक योग्य अछि। एहि नाटकक अभिनय महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह द्वारा आयोजित सुरेश पूजा महोत्सव (इन्द्रपूजा)क अवसर पर कएल जएबाक सूचना प्रस्तावनामे देल गेल अछि। कहल जाइछ जे 1908 ई.क अकालक पश्चात् रमेश्वर सिंह इन्द्रध्वजोत्थान ओ इन्द्रयज्ञ आरम्भ कएने छलाह। इहो तथ्य एहि नाटकक रचनाकाल-निर्धारणमे सहायक सिद्ध भए सकैत अछि।

Scanned by CamScanner

म.म. परमेश्वर झा रचित एहि नाटकक यथार्थ नाम सेहो विचारणीय अछि। पाण्डुलिपिक आदि वा अन्तमे कोनो नाम नहि देल गेल अछि। मुदा प्रस्तावनामे सूत्रधार 'महामहोपाध्याय श्री परमेश्वर शर्म वैयाकरण केसरि प्रणीत अभिनव दुर्गाचरित नाम नाटक'क अभिनय करबाक सूचना दैत अछि। अतः एहि नाटकक यथार्थ नाम थिक 'दुर्गाचरित'। तखन एकर नाम 'महिषासुर वध' किएक प्रचलित भए गेल से आश्चर्यक विषय। एहि नाटकक कथावस्तु दुर्गासप्तशतीक दोसर ओ तेसर अध्यायक देवी-चरित पर आधृत अछि जाहिमे महिषासुरक वध वर्णित अछि। प्रायः प्रस्तावनामे लेखक-प्रदत्त अभिधानसँ अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा नाट्यवस्तुएकेँ देखि एहि नाटकक नाम महिषासुर वध कहि देल गेल आ सएह प्रख्यातो भए गेल।

आरम्भमे नान्दी-प्रस्तावना देल गेल अछि जाहिमे सूत्रधार, नटी ओ विदूषक देवादिस्तुतिसहित नाट्यावसर, नाटकक नाम ओ ओकर अभिनेय वस्तुक सूचना दैत अछि। तत्पश्यात् मुख्य कथावस्तु तीन अंकमे सम्पन्न होइत अछि। पौराणिक प्रसिद्ध कथावस्तुक धार्मिक ओ भक्ति भावनाक आवरणमे रचयिता देश-समाजक दुरवस्था, विलासिता ओ विदेशी वर्चस्विताक प्रतीकात्मक अभिव्यंजना कएलनि अछि। जतबा आ जाहि रूपमे ई भेल अछि ताहिसँ अधिक मुखर होएबाक अपेक्षो करब, रचनाकालक ओ लेखकक परिवेशकेँ देखैत, समीचीन नहि।

नटी द्वारा गाओल गीतमे यदि भारतक दुरवस्थाक झलक आओर ओहिसँ मुक्तिक कामना व्यञ्जित होइत अछि तँ महिषासुर ओ इन्द्रक राजसभामे सुरा-सुन्दरी ओ विलासिता जाहि रूपमे वर्णित भेल अछि से ओहि कालक भारतक सामर्थ्यवान् सामन्त वर्गक मनोवृत्तिक संकेत दैत अछि। लेखक एकरा सभक आलोचना विदूषकक माध्यमसँ कए अपन मनोभावकेँ प्रकट कएलनि अछि।

दुर्गाचरित नामक एहि नाटकमे नाट्यशास्त्रीय विधि ओ साधनक समुचित निर्वाह भेल अछि। तथापि सर्वथा त्रुटिहीन नहि कहल जाए सकैत अछि। विशेषतः तेसर अंकमे महिषासुर द्वारा देवलोक पर आक्रमण, विजय, अधिकार, देवीक आविर्भाव, महिषासुरक संग युद्ध ओ अन्ततः ओकर वधक विस्तृत घटनाकेँ नाटककार नाट्यविधिसँ व्यक्त नहि कए सकलाह। एकरा सभक विस्तृत वर्णन तँ कए देल गेल अछि मुदा ई सभ सूच्यहू रूपमे प्रेक्षकगण धरि कोना सम्प्रेपित कएल जाएत तकर कोनो संकेत नहि अछि। कोनो नाट्यनिर्देश नहि अछि।

जहाँ धरि भाषाक प्रश्न अछि, गद्य-संवाद सर्वत्र मैथिलीमे अछि। पद्यमे संस्कृतक प्रयोग अनेक स्थल पर भेल अछि। गीत सभमे बहुतो ठाम भाषा-साँकर्य देखल जाइत अछि। हिन्दी अथवा हिन्दीक छाप बेसीठाम दृष्टिगोचर होइछ। पात्र ओ परिस्थितिक अनुकूलताकेँ देखैत एकरा अनुचितो नहि कहल जाए सकैत अछि। परन्तु गद्य-संवादमे भाषाक स्खलन कथमपि

Scanned by CamScanner

नहि भेल अछि। कहक चाही जे एहि नाटकक गद्य **सीमन्तिनी आख्यायिका** ओ **मिथिला-तत्त्व-विमर्शक** गद्यसँ अधिक सरल, सुष्ठु, स्वाभाविक, प्राञ्जल ओ लालित्यपूर्ण अछि।

एहि नाटकक प्रकाशनक एक बेर प्रयत्न कएल गेल छल महामहोपाध्यायक भातिज हरिश्चन्द्र झा द्वारा। एहि नाटककेँ सरकारी सहायतासँ प्रकाशित करबाक उद्देश्यसँ ओ एकटा आवेदन देने छलाह बिहारक वयस्क शिक्षा-विभागक निर्देशकक नामसँ जाहि पर तिथि अंकित अछि 6.5.55 ई.। ओहि समयमे निर्देशक छलाह हिन्दीक प्रसिद्ध विद्वान् धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। ओहि समयमे बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनक चेयरमेनक पद पर डॉ. अमरनाथ झा छलाह। डा. झा परमेश्वरझाक ई नाटक पढ़ि बेस प्रभावित भेल छलाह। ओ स्वयं शास्त्रीजीकेँ नाटकक संस्तुति करैत व्यक्तिगत पत्र लिखने छलथिन। पत्र महत्त्वपूर्ण अछि तेँ ओ अविकल उद्धृत कएल जाइछ –

1, King George Avenue
PATNA
May 6

My dear Dr. Shastri,

M.M. Pandit Parmeshwar Jha was a renowned scholar. He left behind him the manuscript of a drama in the traditional style in mixed Sanskrit and Maithili. I have read it and consider it of great merit. I shall be glad if you can help in the publication.

Yours sincerely

(Sd.) A. Jha

हरिश्चन्द्रझाक आवेदनपत्र पर शास्त्रीजी पाण्डुलिपिकेँ विशेषज्ञ ओतए पठएबाक आदेश कएने छलाह। किन्तु आगाँ की भेल से ज्ञात नहि। पोथी धरि अप्रकाशिते रहि गेल। आब म.म. परमेश्वरझाक अप्रकाशित नाटक **दुर्गाचरित** प्रकाशित होएबाक सुयोग पाबि रहल अछि। एहि अनभिज्ञात कृतिक प्रकाशित भेलासँ न केवल कृतिकारक वैशिष्ट्यक परिचय भेटि सकत, अपितु आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालमे नाटकक ओ भाषाक स्वरूप पर सेहो महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ि सकत।

— रामदेव झा

Scanned by CamScanner

पात्र-परिचय

अभिनय स्थल – महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक राजसभा ।

नाट्यावसर – इन्द्रपूजोत्सव ।

घटनास्थल – देवलोक, असुरलोक एवं अन्तरिक्ष ।

पुरुष पात्र –

इन्द्र
नारद
महिषासुर
बिड़ाल
देवगण
(इन्द्र) परिवार
द्वारपाल
दण्डधारी
दूत
दरबान
पहरावला सिपाहीगण
परिचारक
हाहा-हूहू गन्धर्व
सूत्रधार (प्रस्तावना)
विदूषक (प्रस्तावना ओ नाट्यवस्तु उभयमे)

स्त्री पात्र –

दुर्गा (देवी)
महिषी (महिषासुरक रानी)
उर्वशी
मेनका
वेश्या
यक्षिणी
चेटी
खवासिनी
नटी (प्रस्तावना)

Scanned by CamScanner

दुर्गाचरित नाटक

(महिषासुरवध नाटक)

ओम् नमो दुर्गायै

शिवानि ते चरीकरोतु नन्दगोपबालिका ॥1 ॥
प्रचण्डदुष्टमण्डली-विखण्डनैकतत्परा ।
परा पराभवन्तनोतु विद्विषस्तु कालिका ॥2 ॥
रमा विराजतान्तमाममन्दमन्दिरे सदा ।
त्वदाननेऽपिशारदास्तु शारदेन्दुशालिका ॥3 ॥
वरीवृधीतु ते यशो विशोभितञ्जगद्यतः ।
शुभा मतीर्ददातु ते सुभक्तलोकपालिका ॥4 ॥
वितीर्यते शुभाशिषान्ततिः परेश्वरेण ते ।
मुदा कृपाकटाक्षवीक्षिकास्तु रत्नमालिका ॥5 ॥

(नान्दीक उत्तर)

सूत्रधार : अधिक वाक्यरचना व्यर्थ, सम्प्रति प्रस्तुत कार्यसाधनक यत्न करी से उचित ।

(नेपथ्य दिश ताकि)

ऐ ! एही ठाम छी ?

नटी : (पर्दा हटायकेँ शीघ्र आबि) हँ यैह तँ छी, जे आज्ञा ।

सूत्र : ऐ ! आइ भाद्र शुक्ल द्वादशीमे विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महामहोग्रप्रताप श्री 5 मिथिलेश महोदयक राजधानीमे श्री सुरेशपूजा महोत्सव भय रहल अछि, एहि अपलक्षमे प्रधान राजकर्मचारीक आज्ञा भेल अछि जे "तरौनी ग्रामवासि राजसभा पण्डित काव्यकलामण्डित [महामहोपाध्याय] श्री परमेश्वर शर्म वैयाकरणकेसरि प्रणीत अभिनव दुर्गाचरित नाटकक अभिनय करू" तैं चित्त चंचल भय रहल अछि । ओही हेतु अहूंकें सहायतार्थ बजवल ।

नटी : कोनो अन्देशा नहिं, अहाँ अपनहि तेहन निपुण छी जे सभ काज सुन्दर जकाँ भय जायत । ताहि पर हमहुं सङ्गहिं रहब ओ अहाँक ओहिठाम पात्रो सभ परम सुशिक्षित छथि ।

Scanned by CamScanner

सूत्र : से सभ सत्य,परन्तु एहि तरहैं गुणिगणवेष्टित राजगोष्ठीमे नाटक प्रयोगक प्रथमे अवसर थीक। तैं हृदय सशंक होइछ जे केहन होएत।

नटी : तैं पहिनहिं एहि समीपस्थ मन्दिराधिष्ठिता वाग्देवताक स्तुति कय लिअ,तखन अभिनयारम्भ करब।

सूत्र : एवमस्तु।

(पर्दा उठला उत्तर मन्दिरस्थ सरस्वतीक दर्शन कए स्तुति करैत छथि।)

नमामि देवि शारदे विरिञ्चिचित्तचारिके ॥1 ॥
सिताम्बुजासनस्थिते सितांशुकोपवेष्टिते।
सितप्रसूनपूजिते कवित्वशक्तिकारिके ॥2 ॥
श्रुतित्रयोपवीणिके प्रशस्तवेणिकेऽम्बिके।
कुचोच्चभारसन्ततेऽलिकेऽर्धचन्द्रधारिके ॥3 ॥
सुपुस्तलेखनीकरे नतोऽस्मि ते पदे परे।
दयस्व सेवके धियन्ददस्व मोहहारिके ॥4 ।

नटी :

तोंहे जननि विलोकहु जनक देस। जहँ जनसमूह सह कलिकलेस॥
आरत भारत जन धरम वेस। नित बदलतु हैं जस वसु विदेस॥
शुभ अवसरमे तोंहे करि प्रवेस। अब देहु सुमति भारत सन्देस॥
घर घर हो विद्या धरम वेस। दुख दारिदके नहिं रहहि लेस॥
तुअ गुन गन [गावत] सतत सेस। नहिं पार परत कहँ जन परेस॥

(एकर बाद विचित्र स्वांग धारण कए एक फराठी हाथ लटपटाइत विदूषकक प्रवेश।)

विदूषक :

हम थिकौं बिपटा बुद्धि निधान। करू सँबहि मिलि हमर समान॥
पाँजिपाटि हमरा सन ककरहु नहिं छैन्ह कुल अभिमान।
भोज काजमें हमे परोसिय दालि भात पकमान॥
आखर हमे एको नहिं जानी विद्यामे परवीन।
जे केओ हमर कुचेष्टा करताह सेहो बुद्धि विहीन॥
पाणिनिकें देल परम परिश्रम गौतम गोता खाय।
जैमिनी मुनि पुरहितिया भेलाह व्यासो गेलाह पड़ाय॥
विद्यार्थी हमरे सभ थीकथि शुक्र बृहस्पति सेस।
ब्रह्मासँ दुइ चारि बात भेल सभ छथि हमर महेस॥

Scanned by CamScanner

यद्यपि भूखें तँ आंखि तिरमिराइत अछि। किच्छु नहिं सूझैछ तथापि कानमे किच्छु शब्द बूझि पड़ैछ जेना केओ गपसप कय रहल अछि। तैं एहि रंगभूमिमे टहलिकय देखी जे के सभ छथि।

(नीकें ताकि कए)

औ ! नायक थिकहुं ? देखैत छी आइ बड़ उभ्रचुभ्र, की थिकैक जे दूनू वेक्ती फुदुर फुदुर गपसप उड़ाय रहलहुं अछि।

सूत्र : औ ! विदूषक ? आउ आउ भल बेरिमे अयलहुं अछि। आइ दरबारसँ आज्ञा भेल अछि जे "एक अभिनव नाटक प्रयोग करह", तैं विचारमें छी जे तेना अभिनय हो जे अपूर्व ओ सर्वप्रिय हो।

विदू : जहिखन नटी आगाँ भय नाचय लगतीहि तहिखन अपूर्व ओ सर्वप्रिय भय जायत।

सूत्र : औ ! विदूषक ! अहाँ सभ दिन एके रंग बूड़िबक रहलहुं, एकोरती लाजोबीज तँ नहिं जे केहन सभामे कोना बाजी।

विदू : हँ, औ हमरा लाजबीज कहाँ सँ आओत, लाजबीज तँ अहाँ दूनू वेक्तीकें अछि जे भरल सभामे एकान्ती मचाय रहलहुं अछि।

सूत्र : औ ! विदूषक ! विचारक बीचमे वृथा बकवाद उठाय विघ्न कथी लय करैत छी।

विदू : औ ! नायक ! अधिक गर्वो नहिं काजक, अहाँक लक्षण बड़ कुरङ्ग देखैत छी, सम्हारने रहब, जेना इन्द्र गर्व खर्च कय महिषासुर स्वर्गमे अपन अधिकार जमाय लेलक तहिना केओ दछिनहा पछिमहा नाटकवाला आबि अहूंक दर्प भंग कए एहू देशमे ने अपन अधिकार जमाबय।

सूत्र : अतएव हम अहाँकें बूड़ि कहैत छी, ई नहिं सुनल अछि जे "ई मिथिला भगवतीक देश थीक, आन ठामसँ केहनो उत्कल्ली अबैत छथि तँ एहि ठामसँ हारिये कय जाइत छथि।" अहाँ ई निश्चय जानू जे ''जेना श्रीदुर्गाक प्रसादसँ महिषासुरक उन्मूलन कय इन्द्र स्वराज्य पओलन्हि जहिना विपक्षीक उच्छेद कय हमरहु लोकनि ओही प्रसादैं स्वतन्त्र गुण विचरण प्रकाश करब। और सूनू।"

(श्लोक)

कर्त्ता काव्यकलाकलापनिपुणो गोष्ठीगरिष्ठाग्रणीः
श्रीचण्डीचरितञ्च रोचकमिदञ्चेतश्चरी कृष्यते ॥
पात्राण्यत्र भवादृशानि बहुशो दृश्याभिनेतृण्यहो
भाग्येनैव हि लभ्यते गुणिगणैरीदृक्समग्रो गुणः ॥1 ॥

Scanned by CamScanner

तैं आब विलम्ब व्यर्थ, अपन अपन वर्णिका परिग्रहण करी सैह उचित।

(विदूषक दिश देखि)

औ मित्र ! अहाँ अबितहिं भूख भूख करैत छलहुं अछि तैं जे इच्छा हो से भोजन कराय दी।

विदू : भूखल तँ हम अवश्य छी परन्तु बड़ पैघ कुलक लोक थिकहुँ सभक परोक्षमे एक हमहि टाम निबाहनिहार छी, तैं अहाँ नचनिहारक घरमे अन्नयोग तँ नहिं कय सकैत छी तखन केवल फलाहारी वस्तु पैड़ा, कलाकन्द, मण्डा, सन्देस आदि कमसँ कम तीनिओ चारि सेर भरि हो तँ अनाय दिअ जे जलपान धरि कय ली।

सूत्र : बेस आंगन सँ पठाय दैत छी।

विदू : औ ! बाबू अहाँक विश्वास नहिं हमहुं पछुओनहिं अबैत छी।

(सभनिष्क्रान्त। जवनिका पात)।

प्रस्तावना

(जवनिका उत्थापन। सभामे सिंहासनस्थ इन्द्र, वाम भागमे शची, दक्षिणमे जयन्तक प्रवेश, चतुर्दिश देवता सभ सेवामें, आगामे अप्सरा सभ और सूत मागधवन्दी सभ स्तुति करैत छथि।)

यथा (श्लोक)

यः शृङ्गारपरस्स्वनन्दनवने शच्या समालिङ्गितः
पश्यन्नप्सरसाधिलासमसमम्प्रीतिम्पराम्प्राप्तवान् ॥
क्रुद्धस्स्विवद्धपविप्रहारपतितान्दैत्यानकार्षीद्रणे
तस्मै देवगणांग्रगाय हि नमश्शक्राय वक्रारथे ॥1 ॥
स्फूर्जद्वज्रौघजीर्य द्दितिजकुलवधूबालवैधव्यदीक्षा–
दक्षङ्क्ष्मामृत्सुपक्षयक्षकृदतिवलक्षाभ्रमातङ्गनिष्ठम् ॥
सद्धर्माणं सुधर्माधिपतिमधिनभस्योत्थितं सस्यवृद्ध्यै
बुद्ध्या संशुद्धयाऽद्धा भजत बुधजना जिष्णुमिष्टार्थलब्ध्यै ॥2 ॥

नमोऽस्तु देवनायकाय सिद्धिहेतवे। नभस्यशुक्लकैशवोत्थितोच्चकेतवे ॥
शचीजयन्तसंगताय धर्मसेतवे। नृपार्च्चकस्य सिध्यतात्सुकामनोत्सवे ॥
मुहुर्न्निवेदनं ममेदमात्तसत्पवे। कलत्रपुत्रसम्पदत्र वर्द्धताम्भवे ॥
जयश्रिया समन्वियात्स दुर्ज्जयाहवे। अरिः पदेपदेऽस्य पात्यतां पराभवे ॥
सुभक्तिभावना शिवा भवेत्तवोद्भवे। जना भवन्तु सज्जना रतास्तव स्तवे ॥

Scanned by CamScanner

सज्जन पूजय सुरेशम् ॥
विजितसकलदितिदनुजकुलेशम् ॥
जनसुखदायकमुदितरमेशम् ॥
सुलभतरं तव निखिलभवेशम् ॥

(तदुत्तर सभ विनयपूर्वक प्रणाम करैत छथि)
(हाहा, हूहू आदि गन्धर्व गान करैत छथि)

(सोरठ)

भजा[हु] मन इन्द्रदेव सुतन्त ।
वाम भाग शची विराजित दहिन भाग जयन्त ॥
निगम आगम दर्शनादिक जाहि भनत अनन्त् ।
जनिक करुणा दृष्टिपातहिं मिटत दुःख दुरन्त ॥

(तदुत्तर उर्वशीनाम्नी अप्सरा नचैत छथि)

विराजो तुम सिंहासन सुरराज ।
गुनिगन मिलि गुनगान उचारत सेवत देव समाज ॥
सकल भुवन जन वन्दनकीने सन्तति सम्पति काज ।
होहु दयाल सदा दुख भन्जन देहु अभयवर आज ॥

(मेनकाक नांच)

मेरी ख्वाहिश तुम्हीं पर तुम् तो भौंरे से देबानै हौ ।
लगाकर प्रेमजूही से चमेली पर रबाने हौ ॥
सहेली गर मिली बेली तो उसको जा दबाने हौ ।
कहाँ की रीत यह प्यारे की तुमही नौजवाने हौ ॥

दण्डधारी : (आबि साष्टांग प्रणाम कय) जय जय सुरराज ! महर्षि नारद प्रतीहार भूमि पर ठाढ़ छथि जे आज्ञा ।

इन्द्र : बिना रोकटोक अति शीघ्र लय अबहुन्ह ।

दण्डधारी : जे आज्ञा ।

(नारद मुनि 'महती' नाम्नी अपन वीणा बजबैत आ गान करैत दण्डधारीक संग प्रवेश करैत छथि ।)

Scanned by CamScanner

(विहाग)

रे, अधम मन किये ने, भजह जगदीश ।
नहि, चौरासी लक्ष भ्रमण करि, घसि घसि मरिहो सीस ॥1 ।
ई संसार असार वृक्ष थिक फल एकर नहि नीक ।
अन्तकाल पछताय के रहबह सब किछु लगतहु फीक ॥2 ॥

अहह बहुत दिन पर आइ सुधर्मासभा आयल छी, चित्त बहुत उत्कंठित छल, परन्तु आइ सुरराजक साम्राज्य ओ उत्तरोत्तर सुप्रबन्ध देखि परम प्रसन्न भेलहुं (इन्द्रक दिश ताकि) जयतु जयतु सुरराजः ।

इन्द्र : (उठि कय) भगवत्प्रणतोऽस्मि । (परिचारक दिश ताकि) आसन आसन ।

नारद : देवेन्द्र ! एखन आसनक कोनो प्रयोजन नहिं, आइ अगुतायल छी केवल अपनैक साम्राज्य शोभा देखक हेतु आबि गेलहुँ, दोसरा दिन स्थिर भय आबि सम्भाषणजन्य आनन्दक अनुभव करब । परन्तु महाराज ! एतबा कहने जाइत छी जे 'असुर सभ अहाँक परम विरोधी अछि तकरासँ सम्हारने रहब, ओ धर्मनीतिक उन्नति करैत रहब जाहिसँ कोनो पराभव नहि होय ।'

(ई बाजि नारद प्रस्थान करैत छथि ।)

इन्द्र : औ ! लोकनि ! आब शयनबेला । निशीथ बीतलि जाइछ तैं सभा विसर्जन करी से उचित ।

(सभ यथोचित निष्क्रान्त ।)

इति प्रथम अङ्क

Scanned by CamScanner

अथ द्वितीय अङ्क

जवनिकोत्थापन

(स्थान महिषासुरक राजधानीमे राक्षसोचित वेषैं महिषासुरक आगाँमे वेश्या सभ ठाढ़ि भेलि दृश्य होइछ)

एक वेश्या : (मुसकुराइत) सरकार ! ओहि दिन जे नीक नीक गहना बनबाय देब कहने रही से कहिआ बनबाय देब । मन्त्री सभ तँ अनठाय दैत छथि, आ कि परतारितहिं रहब, परतारितहिं रहब तँ वेस हमरहु कहिओ बेरि भेटत तखन ने ?

महिषासुर : (श्लाघापूर्वक हँसैत) नहिं, नहिं, परतारब कियैक ? अगुताइ जनु । शीघ्रे भय जायत । (अपनहि अपन) कुलवधू हजारो गोटे होइतीहि तैओ वेश्याक ई छवि छटा कहाँ सँ पौतीहि ।

(श्लोक)

सभ्रूभङ्गनिरीक्षणन्दृढ़तराश्लेषोत्तरञ्चुम्बनं
स्वच्छन्देहितबन्धविन्यसनतः क्रौर्येऽपि शैर्यम्परम् ॥
भीक्रीड़ोज्झितहावभावलसितर्य्यँत्राभिकैर्लभ्यते
तन्निन्दन्ति नरा असूयकतरा वेश्यारतं सन्ततम् ॥

द्वारपाल : (आबि साष्टांगपात प्रणाम कय) जय जय करुणानिधान ! ! ! चिक्षुर, चामर, उदग्र, महाहनु, असिलोमा, कराल, बाष्कल, बिड़ाल प्रभृति मन्त्री लोकनि प्रभुक साक्षात्कारसँ कृतार्थ होएबाक हेतु प्रतीहार भूमि पर ठाढ़ छथि । जे आज्ञा ।

महिषा : अतिशीघ्र सम्मुख लय अबहुन्ह ।

द्वारपाल : जे आज्ञा ! (निष्क्रान्त)

(पुनः पूर्वोक्त मन्त्रीक संग द्वारपालक प्रवेश । मन्त्रीगण सभ महिषासुरक सम्मुख भेलाक उत्तर प्रणाम कय यथोचित आसन पर बैसैत छथि ।)

महिषा : बहुत दिन पर आइ एहि तरहैं मित्रमण्डली संघटित भेल अछि तैं आइ किछु पानगोष्ठीक विन्यास अवश्य होबयक चाही ।

(सभ गोटे सहर्ष प्रभुक अनुमोदन करैत छथि)

महिषा : के के एहि ठाम अछि रौ ?

परिचारक : यैह ताबेदार हाजिर, जे हुक्म ।

Scanned by CamScanner

महिषा : रौ, मसालेदार माँछ, मासु ओ तरल बूट थार सभमे रुमालसँ झाँपि कय नेने अबिहें। और हमर खास कोठलीमे जे अर्क सभक बोतल अछि सेहो गलास सहित नेने आ।

(परिचारक सभ वस्तु आनि दुरुस्त कयलक। सभ गोटे आस्वादनपूर्वक भोजन, ओ मदिरापानक अभिनय जकाँ करैत नाना प्रकारक परिहासक कथा करय लगलाह। एहि अवसरमें पूर्वोक्त रूपैं विदूषकक प्रवेश।)

विदू : जय जय महाशय ! खाउ, पिबू खुशी रहू दिअ शय शय।

महिषा : मित्र हमर नमस्कार।

विदू : लाबी झट द खाजा मुंगबा तँ देखू चमत्कार।

महिषा : औ विदूषक ! अहाँ तँ सभ दिन खाजै मुंगबा घोखैत छी, आइ नाना प्रकारक भक्ष्य भोज्य उपस्थित अछि, से सभ खाउ, ई पुरान चालि सभ छोड़ू।

विदू : वेस, आइ अहींक सभ्यतानुसार भोजन होऔ।

(परिचारक एक थार, एक बोतल, एक गलास विदूषकहुक आगाँमे राखि देलक।)

विदू : (रुमाल उठाय थार देखि) बाप रे बाप ! ई वस्तु सभ तँ हमर बापो पितामह नहिं आंखि देखलें छलाह तखन हमर कोन कथा। औ साहेब, हम नहिं ई सभ खायब।

महिषा : औ मित्र ! ई सभ परम गुणद वस्तु थीक, यदि अहाँ ई सुस्वादु वस्तु सभ भोजन कय ई अमृतोपम अर्क पीबि जाइ तँ कोनो तरहक थाकनि नहिं रहत।

विदूषक : औ ! साहेब ! हम ने एहि गामसँ ओहि गाम कोनो उद्योग करय जाइ, ने गामक खेतमे कोदारि पाड़ी तखन थाकनिक कोन चर्चा।

महिषा : श्रमो नहि बूझि पड़त।

विदूषक : भरि दिन तँ पुबारि घरक असौरा पर पटिया ओछाय पड़ल पड़ल ठरड़े पाड़ैत रहैत छी तखन श्रमक तँ नामो नहिं।

महिषा : औ कोनो धन्धो चिन्ता नहिं होएत।

विदू : सभ दिन तीनि चारि ठामसँ नोत होइतहिं अछि, लड्डुए जिलेबी खाइत दिन बीतैत अछि कोन जे घरहु लय एक मोटरी बन्हने अबैत छी तखन धन्धा चिन्ता कथीक।

महिषा : तँ की अहाँ नहिं खाएब ?

Scanned by CamScanner

विदू : हम तँ नहिंए खाएब, परन्तु अहूँ कें मना दैत छी जे 'एहन दुर्व्यसनमे जनु पड़ी, देखू राजनीतिमे मनु की लिखैत छथि।'

(श्लोक)

पानभक्षाः स्त्रियश्चैव मृगया च यथाक्रमम् ।
एतत्कष्टतमव्विंद्याच्चतुष्कं कामजे गणे ॥1 ॥

अर्थात् मदिरापान, जुआ, वेश्या और शिकार एहि चारि वस्तुक व्यसन राजाकें परम दोष थिकैन्ह। ताहू पर एहि अलच्छा सभक अहाँ संग कयल अछि, ई सभ एहि नगरक नामी छटल लुच्चा सभ थीक। नहि जानि की होइनिहार अछि।

महिषा : औ बूड़ि हम ई सभ व्यसनार्थ नहिं किन्तु राज्यसुखार्थ करैत छी, परन्तु अहाँ सन देहाती लोक एहि सभामे बैसय योग्य नहिं थिकहुं।

विदू : वेस, हमहुँ देवता पितरसँ यैह मनबैत छलहुं अछि जे 'कहुना अहाँक सभासँ जी जान बचाय कय पड़ाइ'। [देखैत छी जे] बुधिआर लोकनि कोन सहायता करैत छथि, हम तँ सहजहिं बुड़िबक छी।

(ई बाजि विदूषक निष्क्रान्त।)

बिड़ाल : आब, हमरा लोकनि एहि स्थानकें निर्मक्षिक और निष्कण्टक कयल, आब किछु गीत नृत्यहुक विनोद होना चाही।

महिषा : वेस।

(विट कें आज्ञा भेलैन्हि जे नाच आरम्भ हो। एक वेश्या ठाढ़ि भय गबैत अछि।)

(ठुमरी)

निठुर छैला तुम से करूँ कैसे प्रीत ?
दिलका देनो इन दिनों बड़ी कठिन की बात ॥
पीछे को पछताय कर छन छन छीजत गात ॥1 ॥
सौतिन के घर घुमत फिरत हौ कौन तेरा परतीत।
निशवासर नहिं चैन परत है, कौन हमारो मीत ॥2 ॥
दई निर्दई होत नर, याते रहना चेत।
नहिं तो साँझ सबेर में, जान जाहिंगे सेत ॥3 ॥
[कपट वचन बोलत नहिं शरमत कैसी तेहारी रीत।]

Scanned by CamScanner

झूठी झूठी बात को, मीठी कहेउ बनाय ।
ताते यह हालत भई, रूठी फिरति हूँ हाय ॥4 ॥

दण्डधारी : (सविनय) श्रीमत्करुणानिधान आइ उत्तराखण्ड अलका दिशसँ एक यक्षिणी आबि डेउढ़ी पर हाजिर छथि, और चाहैत छथि जे 'श्रीमानक समक्ष किछु अपन गुणक परीक्षा दी, तैं आज्ञा हो तँ हुनकहु लय आबी ।'

महिषा : वाह, हम एही तरहक सेवक चाहैत छी जे 'अन्तःकरणसँ हमर सुखाभिलाषी हो वा एही तरहैं प्रियवस्तु सभक अन्वेषणमे तत्पर रहय । एक तँ दिन भरि झंझटमे रहैत छी, मन्त्री अबैत छथि तँ "करुणानिधान ! एहि कागज सभ पर मोहर [ओ] हस्ताक्षर कय देल जाय" यैह भुकैत । सेनापति अयलाह तँ 'पृथ्वीनाथ ! अमुक देशक अधीन राजा बिगड़ि गेल छथि किछु सेना पठयबाक आज्ञा देल जाय' यैह बजैत । डेउढ़ीवरदार सभ आयल तँ 'अन्नदाता ! आइ ड्यौढ़ी पर भण्डारसँ नीक वस्तु सभ नहि गेल' यैह शिकायत करैत । तखन दिन तँ एही पञ्चाइत सभमे बीतैत अछि, रातिअहुमे एक, दुइ घड़ी मनोविनोद नहिं करब तँ स्वास्थ्य कोनो स्थिर रहत, शीघ्र लाबह ।

दण्डधारी : (निष्क्रमण कय फेरि यक्षिणीक संग प्रवेश कय यक्षिणीके कहैत छथि) नाच आरम्भ करक आज्ञा श्रीमान्‌सँ भेल अछि ।

(यक्षिणीक नृत्य)

(प्रथम गीत)

आई हूँ तेरे नाम को सुनकर अभी द्वारे ।
साहेबी तेरी सलामत होय रजबारे ॥
मत भूलियो मुझको कभी मत हूजियो न्यारे ।
कर जोरि कर विनती करूँ, खुब देखियो प्यारे ॥

(दोसर गीत)

आए हो इस गली जरा मुझसे भी मिल लेना ।
लीष्टमे मासूक के, मुझको भी लिख देना ॥
जा जहाँ तुम जाते हो, पर ख्याल रस लेना ।
इन्तजारीमे रहूँगी, यार सुध लेना ॥

(ई गीत सुनि सभ इसखी लोकनि 'वाह वाह'क वर्षा करैत लोट पोट भय गेलाह ।)

Scanned by CamScanner

खवासिनी : (महिषासुरक पट्टमहिषी लोकनिक खवासिनी साष्टांग प्रणाम कय) महाराजाधिराज ! हमर स्वामिनी श्रीमती महारानी दाइजी प्रभुपादक, दर्शनाभिलाषिणी चीक लग ठाढ़ि छथि, जे आज्ञा ।

महिषा : (चारू दिश ताकि) एहि ठाम अनठिया तँ केओ नहिं [अछि], सभ अपनहिं ओहि ठामक लोक अछि, क्षति कोन, आबथु ।

(चेटीक निष्क्रमण, पुनः महारानीक सङ्ग प्रवेश । महिषा उठि राजमहिषीकें हाथ धय सिंहासन पर बाम भागमे बैसाय लेलन्हि ।)

महिषा : की आइ मन प्रसन्न अछि ।

महिषी : (चुप) ।

महिषा : (चेटीक प्रति) ऐ ! खवासिनी ! की कारण जे 'आइ बहुत वैमनस्य देखैत छिऐन्ह ?'

चेटी : हुनक आशय हम किछु कहि सकैत छी ।

(गीत)

साजन क्षमब वचन ।
हमर हृदय अछि जरल एखन ॥
जकर दयित बस सौतिनी सदन । कुलिश कठिन धिक तकर जीवन ॥
सभ जन जनयित अछि मनमन । हम कि करब पुन पुनक कथन ॥

(गीत उचिति)

आरे, सेवलों परसमनि जानि रे । मूरहु बड़ भेल हानि रे ॥
जेहन हमर छल मानि रे । सुमरैत सेहओ गलानि रे ॥
आगि होहि वरु पानि रे । छुटय न जनमक बानि रे ॥

करुणानिधान ! ओना सखी सहेली सभ कईएक दिनसँ प्रथा कयने छलि जे 'आइ काल्हि महाराजक चित्तवृत्ति बहुत नीच गामिनी भय गेल छैन्हि' परन्तु ताहि कथामे अनास्था बुद्धि छलैन्ह । किन्तु आइ जखन विदूषकक सन प्रामाणिक लोक अपना आंखिक देखल सभ समाचार कहलथीन्ह तखनसँ छाती फाटि गेलैन्ह, धैर्य टूटि गेलैन्ह, ओ कहय लगलीहि जे 'हमरा लोकनिक जिबितहिं ओ देखितहिं लुच्चा, लबार, भांड़, भड़ुआ, नटी, पतुरिया राज लुटने जाइत अछि' जखन नहिं रहना गेलैन्ह तखन अपनहिंसँ कौतुक देखय अयलीहि, आब जे मन आबय ।

Scanned by CamScanner

महिषा : (किञ्चित चुप भय) ऐ ! खबासिनी ! ओ विदूषक परम बूड़ि आ फुसिआह छथि तखन हुनक कथाक कोन विश्वास (महिषीक प्रति) आब बहुत राति बीतलि, हमहुँ सभा विसर्जन करैत छी । शयनागार चलू, ओहिठाम सभ कथाक उत्तर कहब ।

(महिष हाथ धय आग्रहक अभिनय करैत छथि, महिषी हाथ झाड़ि अस्वीकार करैत छथि ।)

महिषी : (गीत)

शमनीयम्प्रिय गन्तुन्नेहे, अद्य किमप्यसुखम्मम देहे ॥
यदि नीयेय बलान्मीयेऽहं, कां हि पुरा परिपश्यसि गेहे ॥
कपटपटो रचनाचतुरस्त्वं, वञ्चयसेऽनुदिनम्बहु सेहे ॥
मा कुरु साहसमतिशयमुत्सुक, पादतले पतिता तव हे हे ॥

(दोहा)

तुम तो प्यारे हो चुके, मुझसे न्यारे आज ।
मैं न्यारी तब होऊंगी, जब खिंचिहैं यमराज ॥

(तदुत्तर महिषासुर मानिनीक अनुनय करैत छथि)

(गीत)

महिषा :

[illegible]हं वियोगङ्कदाऽप्येव नेहे ।
यदि त्वम्प्रिये कोपतो मान्न पश्येः, प्रपन्नः पदौ ते तथापि श्रये हे ॥
यदि त्वान्न पश्येयमेकम्पलं वा, रुचिर्न्नैव भोगे न योगे न गेहे ॥
कथञ्चान्यलोको विशोको न धन्यः, प्रियाया वियोगङ्क्षणर्य्यों विषेहे ॥
न मानस्य कालोऽयमालोक्यते ते, विना हास्यमास्यन्न युक्तं सुदेहे ॥

(दोसर गीत)

पादपङ्कजमाश्रये मयि ते दया दयिते न ।
चित्तचातकमाशुमामक मुग्धे (?) वागमृतेन ॥
शिव शिव करोमि विनयम्प्रिये किं रुषितासि ॥ ध्रुवम् ॥
मानमप्यनुमानतः कुरुषे सखीभणितेन ।
दोषराशिविभाजनन्तनुषे मृषा गणितेन ॥
नैव काऽपि मयाऽबला कलिता क्वचिच्छयितेन ॥
का कथाऽप्यधिजागरं रमयस्व मां हसितेन ॥

Scanned by CamScanner

केन केन मया न मानिनि तोषिता लसितेन ।
अद्य मामपराधिनम्मनुषेऽसतीच्छलितेन ॥
आननेन विकाशितङ्कुरु विष्टपल्लँलितेन ।
किम्प्रयोजनमिन्दुनाऽसितपक्षकक्षयितेन ॥
नो विकासमुरीकरोष्यधुनाऽपि भामिनि तेन ।
दूष्यते वदनव्वृँथा तव पङ्कजोपमितेन ॥

प्रिये ! जे किछु संगीतकादि स्नेह हमरा देखैत छी से व्यसन बुद्धिऐं नहिं करैत छी । किन्तु ई सभ राज्यक एक सुख थिकैक ताहि बुद्धिऐं । तथापि एहिमे जतवा अंश अहाँकें अप्रिय हो से त्यागि दी, निश्चय कि अहाँ सनि रूपवती ओ गुणवती धर्मपत्नीकें छाड़ि अनकामे कियैक विशेष यत्न होएत ।

(इत्यादि मधुर मधुर वाक्यैं महिषासुर महारानीक सान्त्वना कयलैन्हि । एही अवसर पर नारद मुनि वीणा बजवैत ओ निर्गुण गान करैत महिषासुरक द्वार पर पहुँचि गेलाह ।)

पहराबाला सिपाही [बनौधिया] – अजी [ये] डोंकरे कौन हौ कहाँ जात हौ ।

नारद : औ सिपाही ! हम नारद मुनि थिकहुं बहुत काल दरबारमे जाइत छी हमरा जनु रोकी [टोकी] ।

सिपाही : अजी हम नाहीं नारद फारद जानित हैं । असस नारद रोज दुइ चारि घूमा फिरा करत हैन, हमका अपान न्वाकरी ख्वाव धाखत न हौ कस जुलमी हुकुम साइड्बोट पर लिखा टांगा आय जौले हुकुम नाही मंगाय दिंहौ तौले जान न पैंहौ ।

दो.सिपाही : [भोजपुरिया] अजी ई बुढ़ौ[का] काहत बाटे ।

प्र.सिपाही : अजी कहिहैं का बबुआत[आ] हैं ।

नारद : (घुमि कय अपनहिं अपन) हमर बबुअयबाक फल दश दिनक बाद बूझि पड़तहु ।

(एही अवसरमे दरबानक प्रवेश)

दरबान : (नारदकें चीन्हि प्रणाम कय) मुनिराज किञ्चित्काल परिश्रम सहल जाय यावत् निवेदन कय हम फिरि आबी ।

(दरबान दरबार जाय, जय जय महाराज कहि, नारदक आगमनक निवेदन कयलैन्हि ।)

Scanned by CamScanner

महिषा : वेस नारद मुनि अनिवार्य आ अव्याहतगति छथि। ओ हमरा बाप,पितामहुक समयमे सभ अवसर पर आबथि। तैं एहू सभामे अओताह तँ क्षति नहिं,लय अबहुन्ह।

(दरबान निष्क्रमण कय पुनः नारदक संग प्रवेश कयल)

(नारद निर्गुण गबैत छथि)

(गीत)

नारद :

सुनु सतगुरु के वचनियाँ लोगो।
ई संसार जलक बुदबुद सम, छनहिमें होत विलननियाँ।
हे अभिमनियाँ लोगो।
परदारा परधन मति छूओ,फिर पाछे पछतनियाँ।
हे अभिमनियाँ लोगो।
काम क्रोध मद मोह तेजिके,करि लेहु प्रभुके भजनियाँ।
हे अभिमनियाँ लोगो।

महिषा : मुनिराज प्रणाम।

नारद : परमोत्तम स्थितिमें प्राप्त होएब।

महिषा : अपनै तँ सर्वत्र भ्रमण करैत छी,कहू कोनो विशेष समाचार।

नारद : और तँ कोनो विशेष नहिं परन्तु एखन स्वर्गहिंसँ चल अबैत छी,इन्द्रक सभाक शोभा देखि चित्त विस्मित भय गेल।

महिषा : हमरहु सभासँ विशेष ?

नारद : खिसिआइ नहिं तँ कही।

महिषा : खिसिआएब कियैक।

नारद : सत्य पूछी तँ ओतूका षोड़शांशो एतय नहिं।

महिषा : (क्रुद्ध भय) अशक्य नारद थिकहुं,हम की कहू,आन रहैत तँ दण्ड दितिऐक,ई नहि जानल अछि जे –

सत्यम्ब्रूयात्प्रियम्ब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियञ्चा नानृतम्ब्रूयादेष धमस्सनातनः॥

Scanned by CamScanner

नारद : जहिं जानल अछि तहिं ने फूसि कथा प्रिय बना कय नहिं कयल (कहल) तथापि हमर कथा प्रिय नहिं लगैत अछि तँ हम जाइत छी। (ई कहि नारद निष्क्रान्त)।

महिषा : (सेनापतिक प्रति) आः हमरा आगाँ के इन्द्र, वरुण, कुबेर तैं एहिखन दूत कैं कहि दिऔन्ह जे 'इन्द्रकैं अति शीघ्र वार्त्ता देथीन्ह' और काल्हिये सेना सन्नद्ध हो जे स्वर्ग पर आक्रमण करी।

(ई सभ स्थिर कय सभा विसर्जन)

(जवनिका पात)

इति द्वितीय अङ्क

Scanned by CamScanner

[अथ तृतीय अङ्क]

(जवनिकोत्थान)

(स्वर्गमे सिंहासनस्थ इन्द्रक प्रेवश, चतुर्दिश परिवार)

इन्द्र : (आत्मगत) अकारण मन विमन भय गेल अछि। (प्रकाश) औ ! लोकनि देवलोकमे ककरहु कोनो विघ्न तँ नहिं भेल छैन्ह।

परिवार : नहिं, प्रभुपादक शासन समयमे विघ्नक चर्चा कोन।

द्वारपाल : जय जय महाराज, महिषासुरक एक दूत द्वार पर ठाढ़ भेल छथि, जे आज्ञा।

इन्द्र : काज की थिकैन्ह, बड़ नीक, लय अबहुन्ह।

(द्वारपालक निष्क्रमण, पुनः दूत संग प्रवेश)

दूत : (अपनहिं अपन)

दूत बनिय हम अयलहुँ आगे ॥
दूत थिकहुँ हम सत्तेबाजी, झगड़ा तैओ लागे ॥
जे जन हमर भरोसैं रहताह, से पुनि परम अभागे ॥
जूझि जूझि सबही जन मरताह, बनताह याग छागे ॥

(इन्द्रक प्रति)

सुरराज ! निखिल लोकाधिपति श्री महिषासुर पूज्यपादक किछु संवाद लायल छी, सावधान भय सुनल जाय।

(गीत)

भाग कर घरसे अभी जङ्गल निकलकर जाओगे।
गर नहीं तो फौज से अलबत्त धक्का खाओगे ॥
जो न मानोगे हुकुम तो सख्त सद्मा पाओगे।
कल हमारी है सवारी चेत रहते जाओगे ॥

इन्द्र :

(दोहा)

दूत जानि नाहीं बध्यो, जदपि वचन कटु भाष।
महिषासुरको होयगो, दुर्नय फल रस चाष ॥1 ॥

बेस बेस, दूत अहाँ जाउ महिषासुरकें कहि देबैन्ह जे 'देव सैन्य सतत सन्नद्ध रहैत अछि, सम्हारिक अबिहथि।

Scanned by CamScanner

(दूत ओहि ठामसँ झटकारिक विदा भेलाह कि स्वर्गक छौंड़ा सभ पुरड़ी दैत खेहारलकैन्ह। दूत बाटहिमे महिषासुरक लशकरमे जाय शामिल भेलाह ओ सभ समाचार कहलथीन्ह तदुत्तर महिषासुर स्वर्गक समीप पहुँचि मोर्चाबन्दी कय लड़ाइ आरम्भ कयलन्हि। ओम्हरसँ देवसेना कबायत, परेड कय प्रतियुद्ध देबामे सन्नद्ध भय गेलि। शय वर्ष युद्ध भेला बाद एक दिन आसुरी सेना ताहि तरहैं तीनि दिशसँ आक्रमण कयलक जे देवसेनाकें शिकस्त भय पड़ाय पड़लैक। बस, महिषासुर इन्द्रासन पर जाय विराजमान भेलाह औरो लोकपाल सभक अधिकार छीनि अपन अधीन असुरकें स्थानापन्न राखि सेना द्वारा स्वर्गमे जय घोषणा कराय देलन्हि।

तदुत्तर पराजित देवता लोकनि ब्रह्माकें संग लय विष्णु, ओ महादेवक लग जाय अपना सबहिक दु:ख सुनाय महिषासुरक बधक अनुरोध कयलन्हि। ई सभ सूनि क्रोध पूर्ण विष्णु, ब्रह्मा, शिवक मुँहसँ तथा आनो देवताक देहसँ तेज निस्सृत भय एक दुर्गा स्वरूप भय गेल।

तदुत्तर सभ देवता लोकनि अपन-अपन आभूषण ओ अस्त्र दय ओहि सिंहवाहिनीकें सुसज्जिता कयलैन्हि। और देवता सभ जयजयकार ओ मुनि सभ स्तुति करय लगलाह।

तदुत्तर दुर्गा आनन्दसँ तेना अट्टाट्टहास सहित शब्द कयलन्हि जे सकल भुवनतल व्याप्त भय गेल। से शब्द सुनितहिं महिषासुर ओहि दिश दौड़ि अयलाह। ओतय देवीकें देखि अपन सैनिक सभकें आज्ञा देलैन्हि जे 'एहि उद्धता स्त्रीकें मारैत जाऊ'।

तदुत्तर सैन्य सभ जीवोपेक्ष लड़य लागल। परन्तु केओ देवीक तरुआरिसँ काटल गेलाह, ओ केओ मुसरसँ [थकुचल गेलाह], केओ गदासँ चूरल गेलाह, केओ घण्टाक शब्दसँ मोहित भय खसलाह, केओ पाशसँ बान्हल गेलाह, ककरो शिर काटलो गेलैन्हि तँ कबन्धे सभ लड़य लगलाह परन्तु थोड़ेक कालमे फेरि खसि पड़लाह। एवंप्रकारैं साधारण सैन्यक नाश देखि प्रधान प्रधान सेनापति सहित महिषसुर अपनहिं लड़य लय तैयार भय गेलाह। ताहिमे पहिने चिक्षुर लड़लाह से शूलसँ मारल गेलाह। तखन चामर लड़लाह सेहो सिंहक थापड़सँ मुइलाह एवंप्रकारें उदग्र, कराल, उद्धत, वाष्कल, अन्धक, उग्रास्थ, उग्रवीर्य, महाहनु, बिड़ाल, दुर्धट, दुर्मुख सबहि गोटे मारल गेलाह।

तदुत्तर महिषासुर अपनहिं लड़य लगलाह, ककरहु थुथुनसँ, ककरहु खुरसँ, ककरहु नाड ड़िसँ, ककरहु सिंहसँ देवीगणमे मारय लगलाह। एवं प्रमथगणकें पराभूत कय सिंहकें मारय हेतु महिषासुर दौड़लाह। ई सभ हुनक औद्धत्य देखि भागवती क्रोधसँ हुनका पाश लय बन्हलैन्हि। तखन महिपासुर अपन स्वरूप बदलि सिंह बनि गेलाह। लगले भगवती हुनक शिर खड्गसँ काटय लगलीहि तावत् तरुआरि हाथ लय पुरुष बनि गेलाह। आकाशमे 'आश्चर्य आश्चर्य महिपासुर पुरुष भेपैं लड़ैत अछि' ई शब्द होइत अछि।

Scanned by CamScanner

भगवती लगले शरसँ मारय लगलथीन्हि तखन हाथी बनि शुण्डसँ सिंहकें खींचय लागल। भगवती तरुआरिसँ शुण्ड काटय लगलथीन्ह, फेरि महिषक स्वरूप धय युद्ध करय लय उद्यत भेल ओ बाजल –)

महिषा : (दोहा)

नारि जानि कयलहु दया, घूरि घरहि फेरि जाह।
नहि तँ छन मे [फेरि] तो[हि], भोगबह दुःख अथाह ॥1 ॥

दुर्गा :

गरजह गरजह मूढ़ तोह, यावत कय मधुपान।
मारब तोरा तहिखना, गरजत सब देवतान ॥1 ॥

(एतबा बाजि भगवती महिषासुरक ऊपर कूदि पायरसँ कण्ठ दबाय शूल घोंपि देलथीन्हि, तहिखन ओकरा मुँहसँ आधा बहरायल पुरुष युद्ध करय लागल। भगवती तत्क्षणमे तरुआरिसँ ओकरो शिर काटि लेलैन्हि।)

(सभ देवता आकाशसँ पुष्पवृष्टि करैत छथि)

(गन्धर्व गान ओ अप्सरा नृत्य)

(इन्द्रादि देवता मिलि स्तुति करैत छथि)

देवतागण :

जय जय हे सुर नर मुनि हर्षिणि, करुणा दृष्टि सुधामय वर्षिणि ॥
खड्ग शूल तोमर मुसलादिसँ, महिषासुर कुल मूल विधर्षिणि ॥
हे जगदम्ब होहु अवलम्बन, भक्तलोक कलि शोक विकर्षिणि ॥
देहु भक्ति निज पादकञ्ज में, निगमागम परतत्त्व विमर्षिणि ॥

देवी : हे देवगण, अहाँ सभहिं जे हमर पूजन ओ स्तुति कयल अछि ताहिसँ सन्तुष्टि भय हम वर दैत छी जे माङक इच्छा हो से माङैत जाउ। (इन्द्रक प्रति)

अहाँ स्वर्गक राजा होउ, आओर लोकपाल लोकनि अहाँक अधीन रहि अपन-अपन अधिकार पालन करथु।

देवगण : भगवति! जगज्जननि! हमरा सभहिक सभ कार्य एहीसँ सिद्ध भेज जे महिषासुर मारल गेल, आब किछु बाँकी नहि अछि, तथापि जँ वर देब तँ यैह मङैत छी जे "जखन-जखन हमरा लोकनि स्मरण करी आविर्भूता भय रक्षा करी।"

Scanned by CamScanner

इन्द्र : हे ! जननि ! एक हमर ई विज्ञप्ति जे –

(दोहा)

जे भादव शुदि द्वादशी, करि मम पूजा वेस ॥
आसिन शुदि नवरातिमें, पूजहिं तोहि नरेश ॥1 ॥
ताको सुत सम्पति सुमति, राज पाट भरपूर ।
देहु अभय वरदायिनी, कुमति विपति रहु दूर ॥2 ॥

किञ्च–

जीमूतस्सलिलं ददातु समये, विद्या सतामेधता -
ञ्चातुर्वर्ण्यमथ स्वजातिविहितं, धर्मं समालम्बताम् ॥
भूयः शास्तु रमेश्वरो नयपरो, राज्यञ्चिरं शब्दवि –
त्पञ्चास्यो जनचित्तमञ्चिततमैः, काव्यामृतैस्सिञ्चतु ॥1 ॥

दुर्गा : एवमस्तु ॥

(सभ निष्क्रान्त, जवनिका पात)

इति तृतीय अङ्क

(समाप्त)



Scanned by CamScanner